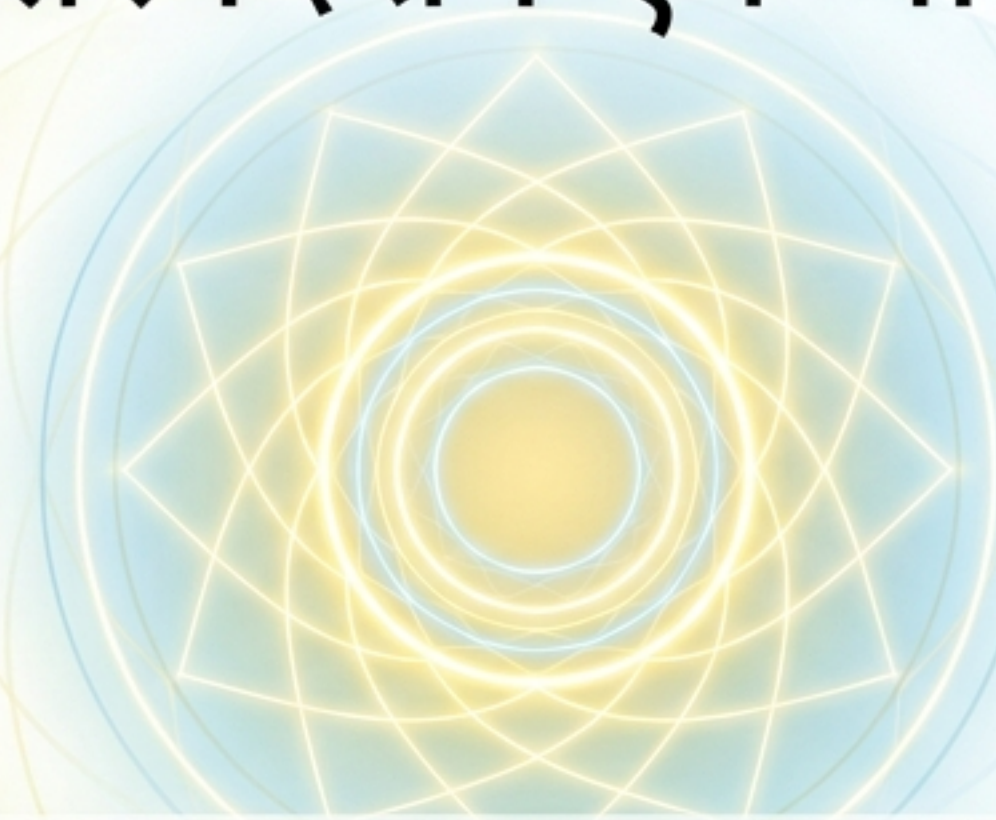


आद्यशक्ति गायत्री की समर्थ साधना: वैज्ञानिक तत्त्वदर्शन एवं जीवन-प्रक्रिया



आम जनमानस के लिए आध्यात्मिक प्रगति, मार्गदर्शन और प्रेरणा का तार्किक ब्लूप्रिंट (अध्याय १३-१६)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

प्रथम चरण: आत्मशोधन



अपरिष्कृत चेतना
कच्चा पारा - विषैला



**आत्मशोधन प्रक्रिया। अहंकार, दुर्गुणों
और अनैतिकताओं का निष्कासन।**
सर्जरी से पूर्व औजारों को उबालना



दैवीय ऊर्जा धारण करने हेतु सुपात्र
मकरध्वज रसायन - प्राणदायी औषधि

Quote of the Day

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का
प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और
आप सबसे कहियेगा – सब बच्चों से कहियेगा कि
मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप
में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति
तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के
आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से काहिए और आप सबसे काहिए
मेरे ज्ञान शरीर को मेरे मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के मेरे ज्ञा से कहियेगा —
जन-जन तक पहुँचाने के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

यथार्थ साधना बनाम जादूगरी-बाजीगरी

भ्रान्ति

बिना चरित्र निर्माण के सिद्धियों की अपेक्षा।
अध्यात्म को शार्ट-कट मानना।



सीधे ‘आसन-ध्यान’
पर कूदना (वर्णमाला
सीखे बिना एम.ए. की
डिग्री चाहना)।

शून्य परिणाम या
विनाश (उदाहरणः
रावण, भस्मासुर का
पतन)।

यथार्थ

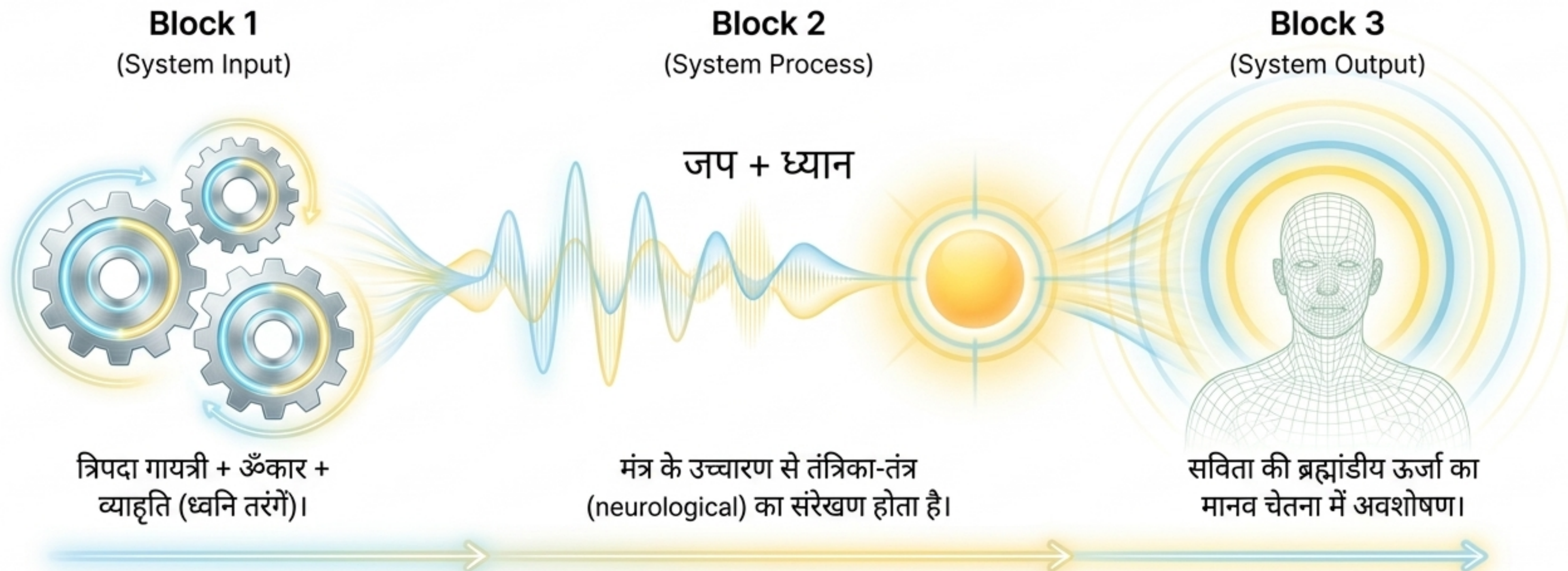
राजयोग का वैज्ञानिक मार्ग
(महर्षि पतंजलि)।

पहले ‘यम-नियम’
(चरित्र निर्माण) →
तत्पश्चात कर्मकाण्ड और
‘आसन-ध्यान’।

ईश्वरीय क्षमताओं
का सहज और
सुरक्षित जागरण।

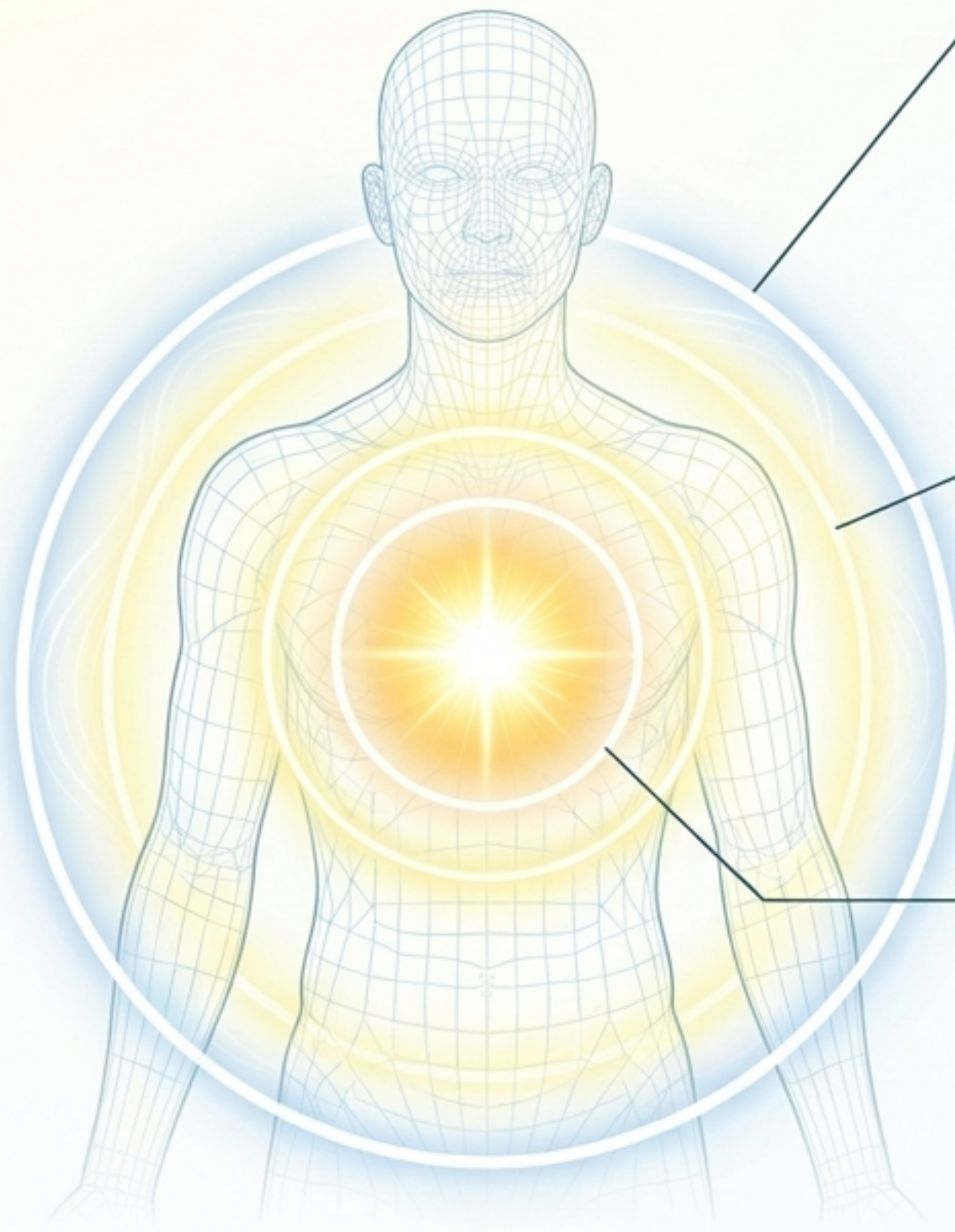


उपासना की भौतिकी: जप और ध्यान का विज्ञान



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रासहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

त्रिशरीर ऊर्जा अवशोषण मॉडल



स्थूल शरीर

सविता की ऊर्जा यहाँ ओजस् के रूप में प्रकट होती है।
परिणाम: शारीरिक जीवंतता, स्वास्थ्य और कर्मठता।



सूक्ष्म शरीर

सविता की ऊर्जा यहाँ तेजस् के रूप में प्रकट होती है।
परिणाम: मानसिक प्रखरता, साहस और बौद्धिक तेज।



कारण शरीर

सविता की ऊर्जा यहाँ वर्चस् के रूप में प्रकट होती है।
परिणाम: आध्यात्मिक गहराई, दैवीय आभा और आत्म-शांति।



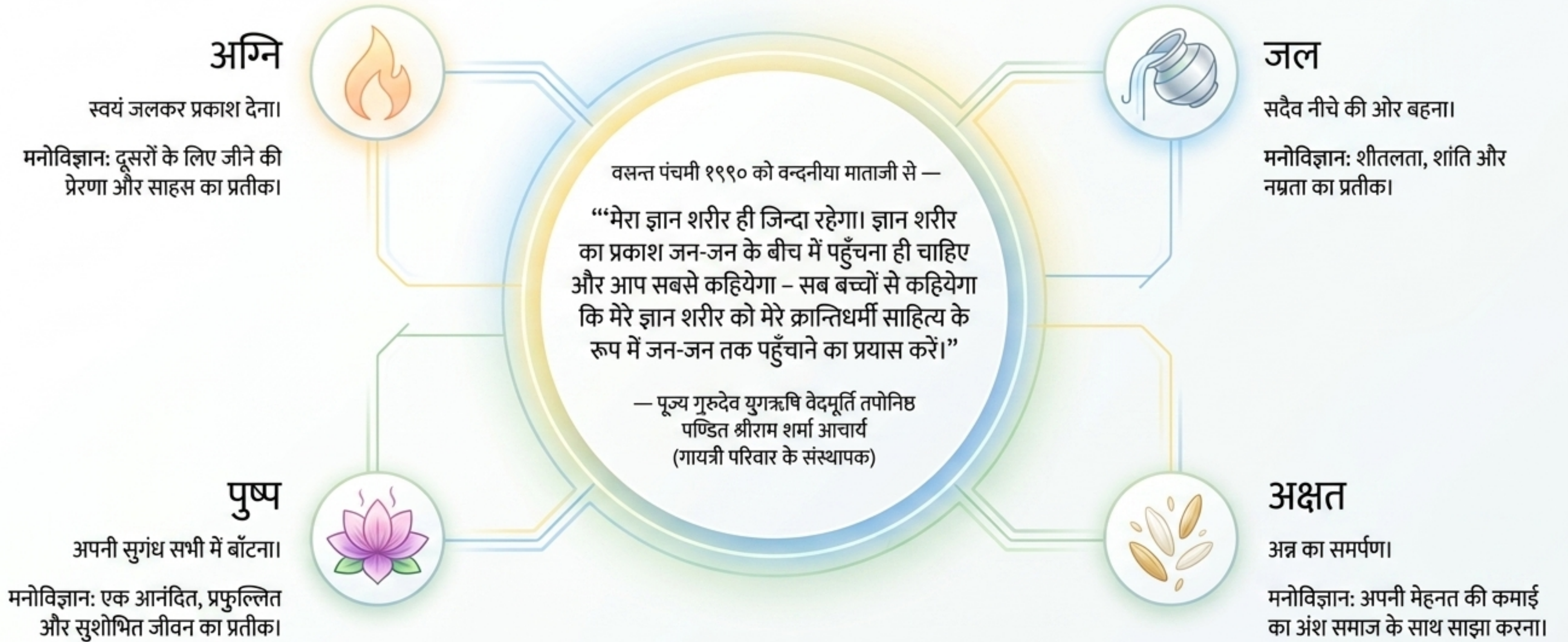
Scientist's Note

वसन्त पंचमी १९९० को
वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा।
ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन
के बीच में पहुँचना ही चाहिए
और आप सबसे कहियेगा —
सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे
ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी
साहित्य के रूप में जन-जन तक
पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति
तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

कर्मकाण्डों का मनोविज्ञान

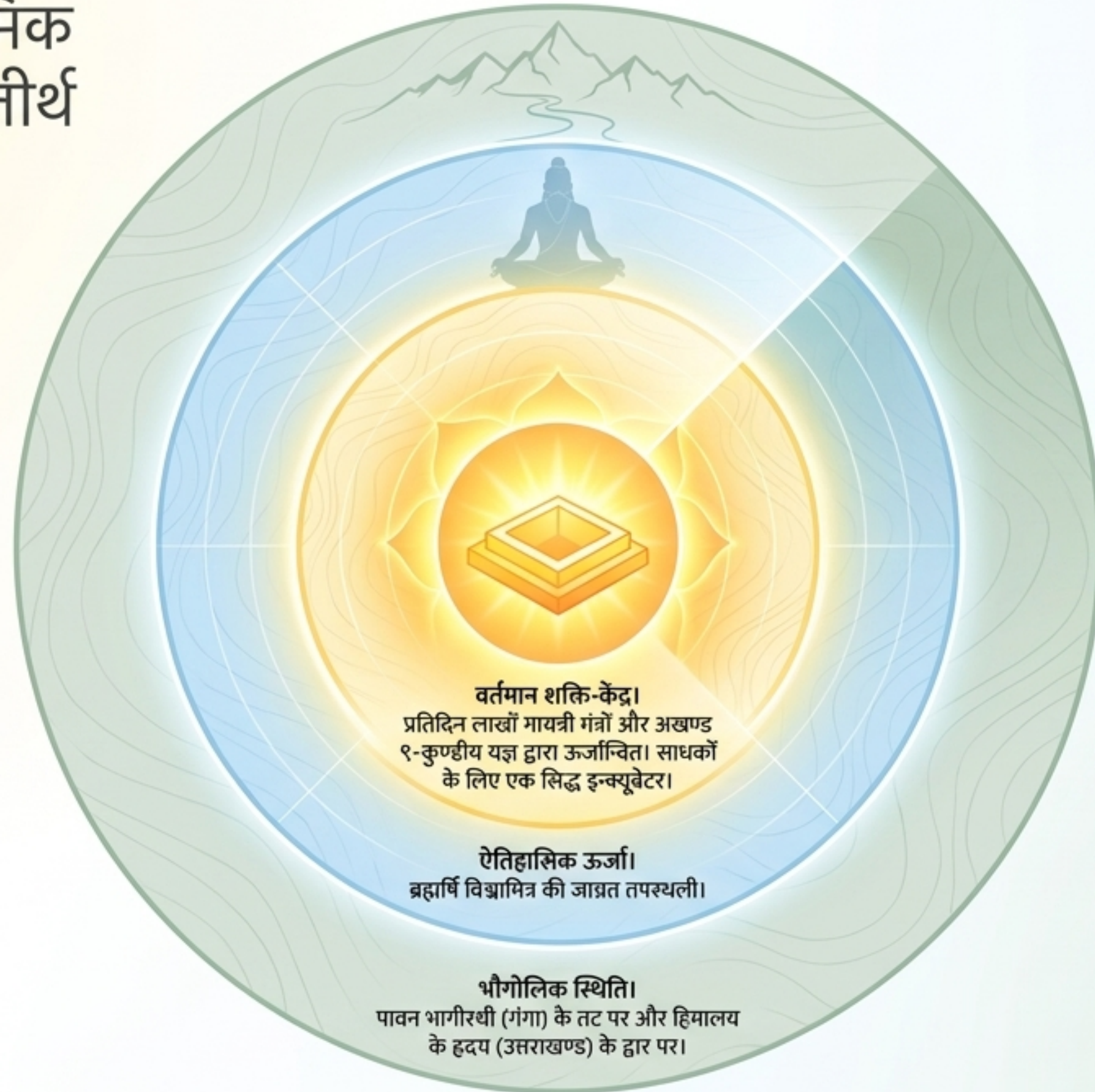


वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में तक पहुँचाने का प्रयास करें” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

अनुष्ठान: ऊर्जा संचय का स्केलिंग फ्रेमवर्क



शान्तिकुञ्ज: आध्यात्मिक प्रयोगशाला और युगतीर्थ



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का
प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और
आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि
मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में
जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति
तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

सत्र साधना: आपके लिए सही मार्ग कौन सा है?

आपके पास कितना समय उपलब्ध है?

९-दिवसीय सत्र (इष्टतम साधना)

२४ हजार जप का परम्परागत अनुष्ठान।
जीवन-प्रबंधन और दिशा-निर्देशन का गहन प्रशिक्षण।

हर महीने की १-९, ११-१९, और २१-२९ तारीख।

५-दिवसीय सत्र (व्यस्त जीवनचर्या हेतु)

१०८ माला का अति-संक्षिप्त अनुष्ठान।
आपत्तिकालीन व्यवस्था।

हर महीने की १-५, ७-११, १३-१७, १९-२३, २५-२९ तारीख।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का
प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए...

...और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा
कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में
जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

प्रयोगशाला के नियम: अनुशासन और पात्रता

वसन्त पंचमी १९९० को
वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा।
ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच
में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे
कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि
मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी
साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने
का प्रयास करें।”

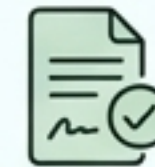
— पूज्य गुरुदेव युगक्रषि
वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)



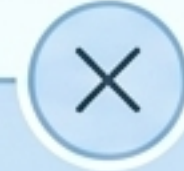
समान पहुँच



पुरुषों की तरह महिलाओं को भी सत्र
साधना का पूर्ण और समान अधिकार
(रूढ़िवादी परंपराओं का खंडन)।



पूर्व स्वीकृति: आवेदन पत्र भेजकर
समय से पूर्व स्वीकृति प्राप्त करना
अनिवार्य है।



वर्जनाएँ



छोटे बच्चे: साधना के गहन और
व्यस्त कार्यक्रम के कारण छोटे बच्चों
को साथ लाने की अनुमति नहीं।



स्वास्थ्य: संक्रामक रोगग्रस्तों और
अत्यंत वृद्ध/जराजीर्ण व्यक्तियों का
प्रवेश वर्जित।

समाज का पुनर्व्यवस्थापन: संस्कारों द्वारा



सामाजिक पतन: खर्चीली शादियाँ, दिखावा और आडंबर समाज को दरिद्र, ऋणी और बेईमान बनाते हैं।



शान्तिकुञ्ज का हस्तक्षेप: जाग्रत ९-कुण्डीय यज्ञशाला में बिना खर्च और बिना आडंबर के संस्कारों की सुलभ व्यवस्था।



परिणाम: गायत्री आधारित यज्ञोपवीत और दहेज-मुक्त विवाह समाज को दिखावे से निकालकर आध्यात्मिक गरिमा की ओर ले जाते हैं।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहि — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति
तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

युग निर्माण ब्लूप्रिंट: महा-परिवर्तन का चक्र



चरण १: आत्मशोधन (अध्याय १३) -
स्वयं को शुद्ध कर ऊर्जा का सुपात्र
बनना।



चरण २: उपासना (अध्याय १४) -
जप और ध्यान के वैज्ञानिक समन्वय से
ओजस्, तेजस् और वर्चस् जगाना।



चरण ४: संस्कार (अध्याय १६) -
दिखावा-मुक्त संस्कारों से समाज में
आध्यात्मिक गरिमा स्थापित करना।



चरण ३: युगतीर्थ (अध्याय १५) -
शान्तिकुञ्ज की जाग्रत प्रयोगशाला में
इस ऊर्जा को गुणित करना।



अंतिम लक्ष्य:
एक नए जाग्रत युग का निर्माण।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा —
सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)